



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Kaalbhairav Ashtakam

देवराजसेव्यमानपावनांग्रीपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।

नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥1॥

देव-राजा-सेव्यामन-पावना-अंघरी-पंकजम व्याल
-यज्ञ-सूत्रम-इन्दु-शेखरम कृपाकरम ।

नारद- आदि-योगी-वृन्दा-वन्दितम दिगंबरम काशिका
-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम भजे ॥1॥

अर्थ - काशी के सर्वोच्च स्वामी. भगवान कालभैरव को नमस्कार. जिनके चरण कमल देवों के राजा भगवान इंद्र द्वारा पूजनीय हैं. जिसकी यज्ञोपवीत में सर्प है. मस्तक पर चन्द्रमा है और वह अत्यंत दयालु है. जिसकी नारद. देवताओं के ऋषि और अन्य योगियों द्वारा प्रशंसा की जाती है. जो दिगंबर हैं. आकाश को अपनी पोशाक के रूप में पहने हुए हैं. जो उनके मुक्त होने का प्रतीक है।

भानुकोटिभास्वरं भवब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।



कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥2॥

भानु-कोटि-भास्वरम भववधि-तारकम्
परम नील-कण्ठम-इप्सिता-अर्थ-दायकम त्रिलोचनम् ।
काल-कालम-अंबुजा-अक्स्सम-अक्सा-शुलम-अक्षरम्
काशिका-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम भजे ॥2॥

अर्थ - काशी के परम स्वामी भगवान कालभैरव को नमस्कार है . जिनके पास एक लाख सूर्यों का तेज है. जो भक्तों को पुनर्जन्म के चक्र से बचाते हैं. और जो सर्वोच्च हैं. जिसका गला नीला है. जो हमें हमारी इच्छाएँ प्रदान करता है. और जिसकी तीन आँखें हैं. जो स्वयं मृत्यु पर्यन्त मृत्यु है और जिसकी आँखें कमल के समान हैं. जिसका त्रिशूल संसार को धारण करता है और जो अमर है।

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥3॥
शुला-टंका-पाशा-दंडदा-पाणिनिम-आदि-कारणम
श्यामा-कयाम-आदि-देवम-अक्षरम् निर-आमयम् ।
भीमाविक्रमम प्रभुम विचित्र-तांडदाव-प्रियं
काशिका-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम भजे ॥3॥

अर्थ - काशी के परम स्वामी भगवान कालभैरव को नमस्कार है . जिनके हाथों में त्रिशूल. कुदाल. फंदा और गदा है. जिनका शरीर काला है



जो आदि भगवान हैं. जो अमर हैं. और संसार के रोगों से मुक्त हैं. जो अत्यंत पराक्रमी हैं और जिसे अद्भुत तांडव नृत्य प्रिय है।

भुक्तिमुक्तिदायकं परिपराचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिष्कण्ठमनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥४॥

भुक्ति-मुक्ति-दायकम प्रशस्त-चारु-विग्रहम्
भक्त-वत्सलम् स्थितम् समस्त-लोक-विग्रहम् ।
वि-निकवन्नन-मनोजन्य-हेमा-किंकिनी-लसत्-कत्तिम
काशिका-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम् भजे ॥४॥

अर्थ - काशी के सर्वोच्च स्वामी. भगवान कालभैरव को नमस्कार . जो इच्छाओं और मोक्ष दोनों को प्रदान करते हैं. जिनके मनभावन रूप हैं. जो अपने भक्तों के लिए प्रेममय हैं. जो सभी लोकों के देवता के रूप में स्थिर हैं. जो अपनी कमर के चारों ओर एक सुनहरी बेल्ट पहनता है जिसमें घंटियाँ चलती हैं जो मधुर ध्वनि करती हैं।

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥५॥



धर्म-सेतु-पालकम त्व-अधर्म-मार्ग-नाशकम कर्म-पाशा-मोकाकम सु-
शर्मा-दायकम विभुम ।

स्वर्ण-वर्ण-शेसा-पाशा-शोभितांग-मानददलम
काशिका-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम भजे ॥5॥

अर्थ - काशी के सर्वोच्च स्वामी. भगवान कालभैरव को नमस्कार. जो यह सुनिश्चित करते हैं कि धर्म (धार्मिकता) प्रबल हो. जो अधर्म (अधर्म) के मार्ग को नष्ट कर दे . जो हमें कर्म के बंधनों से बचाता है. जिससे हमारी आत्मा मुक्त हो जाती है. और जिसके शरीर में स्वर्ण वर्ण के सर्प लिपटे हुए हैं।

रत्नपादप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥6॥
रत्न-पादुका-प्रभाभी-राम-पाद-युगमकम नित्यम
मृत्यु-दर्पा-नाशनम कराला-दमस्त-मोक्षसन्नम
काशिका-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम भजे ॥6॥

अर्थ - काशी के परम स्वामी भगवान कालभैरव को नमस्कार है. जिनके चरणों में रत्नों से सुसज्जित दो स्वर्ण पादुकाएँ हैं. जो शाश्वत. अद्वैत इष्ट देवता (हमारी इच्छाओं को पूरा करने वाले भगवान) हैं. जो यम (मृत्यु के देवता) के अभिमान को नष्ट करता है. जिनके भयानक दांत हमें आजाद करते हैं।



अथासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥७॥
अत्त-हासा-भिन्ना-पद्मजा-अन्नदा-कोश-समततिम
दृष्टि-पाता-नस्स्ता-पापा-जालम-उग्र-शासनम् ।
अस्त-सिद्धि-दायकम् कपाल-मालिका-धरम्
काशिका-पुरा-अधिनाथ-कालभैरवम् भजे ॥७॥

अर्थ - काशी के परम स्वामी भगवान कालभैरव को नमस्कार है . जिनकी तेज गर्जना कमल-जनित ब्रह्मा की रचनाओं (अर्थात् हमारे मन के भ्रम) के आवरण को नष्ट कर देती है. जिसकी एक नज़र ही हमारे सारे पापों को नष्ट करने के लिए काफी है. जो हमें आठ सिद्धियाँ (उपलब्धियाँ) देता है. और जो खोपड़ियों की माला पहनता है।

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥८॥
भुता-संघ-नायकम् विशाला-कीर्ति-दायकम्
काशी-वास-लोक-पुण्य-पाप-शोधकम् विभुम् ।
नीति-मार्ग-कोविदम् पुराणम् जगत्पतिम्
काशिकापुराधिनाथाकालभैरवम् भजे ॥८॥



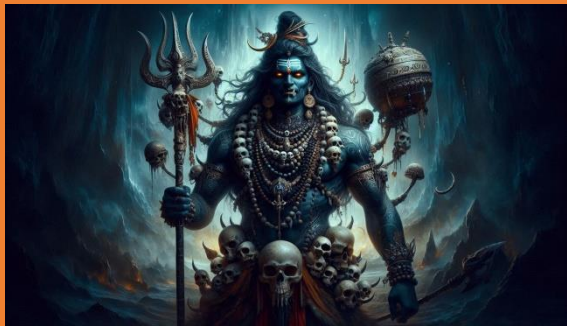
अर्थ - काशी के परम स्वामी भगवान कालभैरव को नमस्कार है . जो भूतों और भूतों के नेता हैं. जो महिमा प्रदान करते हैं. जो काशी के लोगों को उनके पाप और धर्म कर्मों से मुक्त करते हैं. जो हमें धर्म के मार्ग पर मार्गदर्शन करता है. जो ब्रह्मांड का सबसे प्राचीन (शाश्वत) स्वामी है।

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं
प्रयान्ति कालभैरवांग्रीसन्निधिं नर ध्रुवम् ॥९॥
कालभैरवअष्टकम् पट्टमति ये मनोहरं
ज्ञान-मुक्ति-साधनम् विचित्र-पुण्य-वर्धनम् ।
शोका-मोहा-दैन्या-लोभा-कोप-तापा-नाशनम्
प्रयांति कालभैरव-अमघरी-सन्निधिम् नारा ध्रुवम् ॥९॥

अर्थ - काशी के परम स्वामी भगवान कालभैरव को नमस्कार है । जो कालभैरव अष्टकम् के इन आठ श्लोकों को पढ़ते हैं. जो सुंदर हैं. जो ज्ञान और मुक्ति का स्रोत हैं. जो मनुष्य में विभिन्न प्रकार के धार्मिकता को बढ़ाते हैं. जो शोक. मोह. दरिद्रता. लोभ. क्रोध और गर्मी को नष्ट करते हैं - भगवान कालभैरव (भगवान शिव) के चरण (मृत्यु के बाद) प्राप्त करेंगे ।



Related Articles



[Kaal Bhairav Jayanti](#)



[Maa Kali](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com



Follow us on:

